शैख़ सरहिन्दी

और

मुहद्दिस ए बरेलवी

बकलम: मुहम्मद सलीम अंसारी अदरवी

नज़र सानी: मौलाना सादिक़ रज़ा मिस्बाही

शैख़ सरहिन्दी व मुहद्दिस बरेलवी के दरमियान मुश्तर्का बातें

ईमाम ए रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़ सानी शैख़ अहमद फारूकी सरहिन्दी नक़्शबन्दी अलैहिर्रहमा और ईमाम ए अहले सुन्नत मुजद्दिद ए दीन व मिल्लत शाह ईमाम अहमद रज़ा खाँ क़ादरी मुहद्दिस ए बरेलवी अलैहिर्रहमा के दरमियान बहुत सी मुश्तर्का बातें पाई जाती हैं, जैसे शैख़ सरहिन्दी की विलादत 14 शव्वाल सन 971 हिजरी को सरहिन्द शरीफ (पंजाब,भारत) में हुई, इसी महीने में मुहद्दिस ए बरेलवी की विलादत 10 शव्वाल सन 1273 हिजरी को बरेली शरीफ(उत्तर प्रदेश, भारत) में हुई। शैख़ सरहिन्दी का नाम "अहमद" था और मुहद्दिस ए बरेलवी का नाम भी "अहमद" था।

शैख़ सरहिन्दी अपने वालिद हज़रत अब्दुल अहद सरहिन्दी अलैहिर्रहमा के शागिर्द थे जबकि मुहद्दिस ए बरेलवी ने अपने वालिद मौलाना नक़ी अली खान बरेलवी अलैहिर्रहमा से तालीम हासिल की, दोनों हनफी व मातुरिदी थे, यानि फ़िक़्ह में ईमाम ए आज़म अबू हनीफा नुमान बिन साबित अलैहिर्रहमा के और अक़ाइद में ईमाम अबू मंसूर मातुरिदी अलैहिर्रहमा के मुकल्लिद थे। दोनों मुजद्दिदीन का तअल्लुक़ तसव्वुफ़ से था, और सलासिल ए अरबा (नक़्शबन्दी, क़ादरी, चिश्ती, सोहरवर्दी) से शैख़ सरहिन्दी व मुहद्दिस ए बरेलवी का संबन्ध था, लेकिन अगर कोई मुरीद होने को आता तो शैख़ सरहिन्दी सिलसिला ए नक़्शबन्दिया कादरिया मे बैअत करते थे जबकि मुहद्दिस ए बरेलवी को सिलसिला ए कादरिया से खास लगाव था।

शैख़ सरहिन्दी 11 वीं सदी हिजरी के मुजद्दिद थे, जबकि मुहद्दिस ए बरेलवी 14 वीं सदी हिजरी के। शैख़ सरहिन्दी मुजद्दिद होने के साथ मुजतहिद, फकीह और मुहद्दिस थे, मुहद्दिस ए बरेलवी भी मुजद्दिद होने के साथ मुजतहिद, मुहद्दिस और बुलंद पाय के फकीह गुज़रे हैं। शैख़ सरहिन्दी ने होकुमत ए वक़्त के जारी किये हुए बातिल मज़हब का डंके की चोट पर रद्द किया, जबकि मुहद्दिस ए बरेलवी ने होकुमत ए वक़्त के पैदा किये हुए फिरकों के बातिल व गुस्ताखाना अक़ाइद व नज़रियात का रद्द किया और अहले सुन्नत व'जमाअत का दिफ़ाअ किया। इसी तरह शैख़ सरहिन्दी के खुल्फा (प्रतिनिधियों) व शागिर्दों ने शैख़ सरहिन्दी के मिशन को और मुहद्दिस ए बरेलवी के खुल्फ़ा व शागिर्दों ने मुहद्दिस ए बरेलवी के मिशन को दुनिया भर में आम किया व आगे बढ़ाया।

शैख़ सरहिन्दी के बेटे ख़्वाजा मुहम्मद सादिक़, ख़्वाजा मुहम्मद सईद और ज़ैब मसनद ए ख़िलाफ़त ख़्वाजा मुहम्मद मासूम अलहिमुर्रहमा व मुहद्दिस ए बरेलवी के बेटे हुज्जतुल इस्लाम मौलाना हामिद रज़ा खान बरेलवी व मुफ़्ती आज़म हिन्द अल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा खाँ बरेलवी अलैहिमुर्हमा बड़ी शान व शौकत के मालिक थे। शैख़ सरहिन्दी साहब ए तसनीफ़ बुज़ुर्ग थे आप की मशहूर तसनीफ़ मक्तूबात शरीफ है। मुहद्दिस ए बरेलवी भी सैकड़ों किताबों के मुसन्निफ़ थे, आप का लिखा हुआ कंज़ुल ईमान (क़ुरआन पाक का तर्जुमा) और फ़िक़्ह हनफ़ी की इनसाइक्लोपीडिया "फतावा रज़विया" काफी मशहूर व माअरूफ है। शैख़ सरहिन्दी का विसाल 29 सफर सन 1034 हिजरी को हुआ जबकि मुहद्दिस ए बरेलवी का विसाल 25 सफर सन 1340 हिजरी को। [1]

1.मुजद्दिद अल्फ़ सानी और आला हज़रत ईमाम अहमद रज़ा खान/पेज न० 20-31

विलादत

• ईमाम ए रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़ सानी शैख़ अहमद फ़ारूक़ी सरहिन्दी नक़्शबन्दी अलैहिर्रहमा की विलादत 14 शव्वाल सन 971 हि०/16 मई सन 1564 ई० को पंजाब के इलाके "सरहिन्द" में हुई, जिसका पुराना नाम सहरनद था। [1]

• ईमाम ए अहले सुन्नत ईमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस ए बरेलवी अलैहिर्रहमा की विलादत 10 शव्वाल 1272 हि०/14 जून सन 1856 ई० को उत्तर प्रदेश के शहर बरेली में हुई। [2]

आबा ओ अजदाद

• शैख़ सरहिन्दी का सिलसिला ए नस्ब अमीरुल मोमेनीन सैय्यदना फारूक ए आज़म रज़िअल्लाहु तआला अन्हो से जाकर मिलता है, आप के आबा व अजदाद में उल्मा व मुजाहिदीन दोनों नज़र आते हैं, आपके चन्द आबा व अजदाद का तआरुफ़ दर्ज ज़ेल है।

सुल्तान शहाबुद्दीन: शैख़ सरहिन्दी के चौदहवें जद सुल्तान शहाबुद्दीन अलैहिर्रहमा ने कई बार हिन्दुस्तान पर लश्कर कशी की, ग़ालिबन महमूद ग़ज़नवी अलैहिर्रहमा के साथ 391 हि०/1000 ई० और 415 हि०/ 1024 ई० के दरमियान आप ने कुफ्फार से जिहाद किया। और इस्लाम का बोलबाला किया। बहुत ज़्यादा माल ए ग़नीमत लेकर आप हिन्दुस्तान से वापस लौटे।

1.मुजद्दिदीन ए इस्लाम नम्बर / पे०: 311 , 2. पंज गंज ए विलायत / पे०: 61

आखिर में तर्क ए वतन करके आपने फ़क़ीरी इख़्तियार कर ली और सिलसिला ए चिश्तिया में बैअत हो गए। कोहिस्तान ए काबुल में आपने क़याम फ़रमाया और वहीं पर आपका विसाल हुआ।

ईमाम रफ़ीउद्दीन: शैख़ सरहिन्दी के पाँचवें जद ईमाम रफ़ीउद्दीन शैख़ जलालुद्दीन बुख़ारी अलैहिर्रहमा (मृत्यु: 785 हि०) के मुरीद व ख़लीफ़ा थे। अपने मुर्शीद के साथ आप हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाये, सरहिन्द से पाँच-छः कोश के फासले पर सरायस में आप ठहरे, सुल्तान फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ शैख़ जलालुद्दीन का मुरीद था, इसलिए अहले सरायस ने शैख़ जलालुद्दीन से कहा कि आप जब देहली जायें तो सुल्तान तुग़लक़ से कह दें कि सरायस व सामाना के दरमियान एक शहर आबाद कर दें क्योंकि बीच जंगल में खतरनाक जंगली जानवर रहते हैं, सुल्तान ने आपकी सिफारिश क़बूल फरमा दी और शहर आबाद करने के लिए शैख़ जलालुद्दीन के बड़े भाई ख़्वाजा फतह उल्लाह अलैहिर्रहमा को भेज दिया, ख़्वाजा साहब 2000 सवार लेकर वहाँ पहुँचे और एक किला ताअमीर करवाने लगे, मग़र वहाँ एक अजीब हादसा पेश आया, हुआ यह कि एक दिन में जितना किला ताअमीर होता अगले दिन सब मिट्टी में मिल जाता, शैख़ जलालुद्दीन को जब इसकी खबर हुई तो उन्होंने ने ईमाम रफ़ीउद्दीन को किले की बुनियाद रखने के लिए भेजा, आप तशरीफ़ लाये और किला ताअमीर फ़रमाया, यह किला मौजूदा शहर से दूर था। सन 1037 हि०/ 1627 ई० में आबादी बढ़ जाने की वजह से यह किला शहर के अंदर आ गया, इस शहर को सहरनद (अब सरहिन्द) कहा जाता था।

शैख़ अब्दुल अहद: शैख़ सरहिन्दी के वालिद शैख़ अब्दुल अहद अलैहिर्रहमा अय्याम ए जवानी में इक्तसाब ए फैज़ के लिये शैख़ अब्दुल कुद्दुस गंगोही अलैहिर्रहमा (मृत्यु: 944 हि०/ 1537 ई०) के पास तशरीफ़ ले गये, आस्ताना ए आलिया पर क़याम का इरादा किया मगर शैख़ गंगोही ने फ़रमाया कि उलूम ए दीनिया की तकमील के बाद आना, तालीम हासिल करने के बाद जब आप आस्ताने पर पहुंचे तो शैख़ गंगोही का इंतेक़ाल हो चुका था, इसलिए शैख़ गंगोही के साहबज़ादे शैख़ रुकुनुद्दीन अलैहिर्रहमा (मृत्यु: सन 983 हि०/ 1575 ई०) से सिलसिला ए कादरिया और चिश्तिया की खिलाफत हासिल की, सरहिन्द में क़याम के दौरान आप तअर्रुफ और अवारिफुल मआरिफ़ वग़ैरह किताबों का दर्स दिया करते थे, बहुत से मशाइख ने आप से इस्तेफ़ादा किया। 80 साल की उम्र में सन 1007 हि०/ 1590 ई० को आपका विसाल हुआ। [1]

● मुहद्दिस ए बरेलवी का खानवादा सादियों से अपनी दिलेरी व बहादुरी के लिए मुमताज़ था, मुफ़्ती रज़ा अली खान बरेलवी ने इस खानदान को तलवार की जगह क़लम थमा दी, तब (1242 हि०) से लेकर अब तक लगभग 200 सालों से यह खानवादा फतवा नवेसी समेत दीगर दीनी व मिल्ली ख़िदमात अंजाम दे रहा है, मुहद्दिस ए बरेलवी के आबा व अजदाद का मुख्तसर सा तआरुफ़ मुलाहिज़ा फरमायें।

शहज़ादा सईदुल्लाह खान: आप अलैहिर्रहमा रियासत ए कंधार (अफगानिस्तान) के वली अहद यानि उत्तरादिकारी व बढ़हेच पठान थे। जो हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाये,

---

1.सीरत मुजद्दिद अल्फ़ सानी / पे०: 74-79

और लाहौर में क़याम किया, आपकी शुजाअत व हुस्न ए तंज़ीम को देखकर बादशाह की तरफ से आपको लाहौर का शीश महल दिया गया, कुछ दिन बाद आप देहली (दिल्ली) चले आये और यहाँ आपको "शुजाअत जंग" का खिताब मिला, रूहेलखण्ड में बागियों की सरकोबी करने की वजह से हुकूमत ए वक़्त ने आपको सूबेदार (गवर्नर) बना दिया, और बरेली में रहने का हुक्म मिला, बुढ़ापे में आपने नौकरी छोड़ दी और याद ए ईलाही में मशगूल हो गए, जिस मैदान में आप याद ए ईलाही के लिए क़याम किया करते थे, उसी मैदान में आपका विसाल और तदफीन हुई। आपकी निसबत से उस क़ब्रिस्तान का नाम "शहज़ादा का तकिया" कहलाता है।

सआदत यार खान: हज़रत सआदत यार खान अलैहिर्रहमा अपने वालिद सईदुल्लाह खान की हयात में ही देहली के वज़ीर ए मालियात (वित्त मंत्री) बन गए थे, आप निहायत इज़्ज़त के साथ इस ओहदे पर फायेज़ रहे, आप ने अपनी वज़ारत की दो निशानियाँ यादगार छोड़ीं, पहली "बाज़ार सआदत गंज" और दोसरी "सआदत खाँ नहर"।

मुहम्मद आज़म खाँ: सआदत यार खाँ के साहबज़ादे मुहम्मद आज़म खाँ अलैहिर्रहमा भी हुकूमत की जानिब से मोअज़्ज़ज़ ओहदों पर फायेज़ हुए, आपकी तबीअत में फ़क़ीरी और बेनयाज़ी थी, इसलिए आप जल्द ही बरेली वापस आ गये, और अपने दादा की मज़ार के करीब गोशा नशीं हो गए और यहीं आपका विसाल हो गया।

हाफिज़ काज़िम अली खान: मुहम्मद आज़म खान के साहबज़ादे हाफिज़ काज़िम अली खान अलैहिर्रहमा शहर ए बदायूँ के तहसीलदार थे, दो सौ सवारों की बटालियन आपकी खिदमत में रहती थीं, आपकी जागीर में आठ गाँव थे जो

आज़ादी ए हिन्द के बाद सन 1954 ई० तक आपके खानदान में रहे, हाफिज़ साहब मौलाना अनवारुल हक़ फिरंगी महली अलैहिर्रहमा से मुरीद थे, हाफिज़ साहब के दो साहबज़ादे थे, मुफ़्ती रज़ा अली खान व हक़ीम तक़ी अली खान। हक़ीम तक़ी अली खान अलैहिर्रहमा ने फन ए तिब में महारत हासिल की और जयपुर में तबीब ए खास हुए।

मुफ़्ती रज़ा अली खान: आपकी विलादत सन 1224 हि० /1809 ई० को हुई, मौलाना खलीलुर्रहमान अलैहिर्रहमा से उलूम ए दीनिया हासिल करके 22 साल की उम्र में मसनद ए इफ्ता को रौनक़ बख़्शी, आप जंग ए आज़ादी में भी शरीक हुए और मुजाहिदीन जंग ए आज़ादी की सरपरस्ती फ़रमाई, जब अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ उल्मा ए कराम ने जिहाद का फ़तवा दिया तो आपका नाम सर ए फ़िहरिस्त था आपका विसाल 2 जोमादल उला सन 1286 हि० को हुआ।

मौलाना नक़ी अली खान: आप मौलाना मुफ़्ती रज़ा अली खान बरेलवी अलैहिर्रहमा के साहबज़ादे थे। आप ने अपने वालिद से ज़ाहिरी व बातिनी उलुम हासिल किया, हरमैन शरीफैन में आप ने शैख़ुल इस्लाम सैय्यद अहमद बिन ज़ैनी दहलान मक्की, शैख़ अब्दुर्रहमान सेराज हनफ़ी और ईमाम ए शाफेइया अल्लामा हुसैन बिन सालेह अलैहिमुर्रहमा से हदीस व फ़िक़्ह की इजाज़त हासिल की, मौलाना नक़ी अली खान अलैहिर्रहमा का शुमार हिन्दुस्तान के नामवर उल्मा व फ़ोहका में होता था, आप भी जंग ए आज़ादी में शरीक हुए, आपका विसाल ज़िकादह सन 1297 हि० को हुआ, आप के तसानीफ व तालीफात की तादाद मुहद्दिस ए बरेलवी ने 25 लिखी है। जिनमें से चन्द मशहूर किताबों के नाम यह हैं। ● अल कलाम उल अव्ज़ह तफ़्सीर सूरह अलम नशरह (दो जिल्दें), ● जवाहिरुल बयान, ● सुरुरुल क़ोलुब, ● उसुलुल ईरशाद। [पंज गंज ए विलायत / पे०: 46-55]

औलाद

● शैख़ सरहिन्दी की 10 औलादें थीं, जिनके नाम दर्ज ज़ेल हैं।

बेटे

● ख़्वाजा मुहम्मद सादिक़, ● ख़्वाजा मुहम्मद सईद, ● ख़्वाजा मुहम्मद मासूम, ● ख़्वाजा मुहम्मद फरह/फरख, ● ख़्वाजा मुहम्मद ईसा, ● ख़्वाजा मुहम्मद अशरफ, ● ख़्वाजा मुहम्मद यह्या (अलैहिमुर्रह्मा)।

बेटियाँ

● बीबी रुकैय्या बानो, ● बीबी ख़दीजा बानो, ● बीबी उम्मे कुलसुम (अलैहिमुर्रह्मा)। [1]

● मुहद्दिस ए बरेलवी की सात औलादें थीं, जिनके नाम दर्ज ज़ेल हैं!

बेटे:

● हुज्जतुल इस्लाम मौलाना हामिद रज़ा खान, ● मुफ़्ती आज़म ए हिन्द अल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा खान (अलैहिमुर्रह्मा)

बेटियाँ:

● मोहतरमा मुस्तफ़ाई बेगम, ● कनीज़ ए हसन, ● कनीज़ ए हुसैन, ● कनीज़ ए हसनैन, ● मुर्तज़ाई बेग़म (अलैहिमुर्रह्मा)। [2]

1.सीरत ए मुजद्दिद अल्फ़ सानी / पे०: 273, 2. हयात ए आला हज़रत / पे०: 121

तालीम

• क़ुरआन पाक हिफ़्ज़ करने के बाद शैख़ सरहिन्दी ने अपने वालिद शैख़ अब्दुल अहद सरहिन्दी अलैहिर्रहमा से बेश्तर उलूम ए नक़्लिया व अक़्लिया की तहसील की। फिर सियालकोट (अब पाकिस्तान में है) में जाकर मौलाना कमालुद्दीन कश्मीरी अलैहिर्रहमा से बाअज़ माअकुलात निहायत तहक़ीक़ के साथ पढ़ी, शैख़ याक़ूब मुहद्दिस कश्मीरी अलैहिर्रहमा से दर्स ए हदीस हासिल किया और सनद ए हदीस हासिल की। [1]

• क़ुरआन शरीफ ख़त्म करने के बाद मुहद्दिस ए बरेलवी उर्दू व फ़ारसी की किताबें पढ़ने लगे, आप ने मिर्ज़ा गुलाम क़ादिर बेग बरेलवी अलैहिर्रहमा से मीज़ान वग़ैरह पढ़ी, उसके बाद अपने वालिद मौलाना नक़ी अली खान बरेलवी अलैहिर्रहमा से तफ़्सीर, उसूल ए तफ़्सीर, हदीस, उसूल ए हदीस, फ़िक़्ह, उसूल ए फ़िक़्ह, फ़रायज़, इल्म ए कलाम, नह्व, सर्फ़, बयान, बदीअ, मन्तिक, मुनाज़रा और हिसाब वग़ैरह का दर्स हासिल किया। 14 शाबान 1286 हि०/19 नवंबर सन 1869 ई० को 13 साल दस माह 5 दिन की उम्र में आपने सनद ए फरागत हासिल की। [2]

ज़ियारत ए हरमैन शरीफैन

• मौलाना कमालुद्दीन कश्मीरी से तालीम हासिल करने के बाद शैख़ सरहिन्दी हरमैन शरीफैन तशरीफ़ ले गए, और वहाँ के बड़े-बड़े मुहद्दिसीन से दर्स ए हदीस हासिल किया, क़ाज़ी बहलोल अलैहिर्रहमा से आप ने तफ़्सीर ए वाहिदी, तफ़्सीर ए

1.हदाइकुल हनफिया / पे०: 416, 2. पंज गंज ए विलायत / पे०: 62

बसीत, तफ़्सीर ए वसीत, असबाबुल नुज़ूल, तफ़्सीर ए बेज़ावी, मिन्हाजुल वसूल, बुख़ारी शरीफ, मिश्क़ात शरीफ, शमायल ए तिर्मिज़ी, जामेअ सग़ीर सुयुती और क़सीदा बुर्दा शरीफ वग़ैरह का दर्स लिया, क़ाज़ी बहलोल ने आपको मिश्क़ात शरीफ की इजाज़त अता फ़रमाई, शैख़ सरहिन्दी ने मुहद्दिस ए कबीर शैख़ अब्दुर्रहमान बिन फ़हद अलैहिर्रहमा से एक वास्ते से सनद ए हदीस हासिल की। [1]

● मुहद्दिस ए बरेलवी अपने वालिद मौलाना नक़ी अली खान से तालीम हासिल करने के बाद उन्हीं के साथ सन 1295 हि०/सन 1878 ई० को हज व ज़ियारत के लिए हरमैन शरीफैन तशरीफ़ ले गए, इस मौके पर आप ने उल्मा ए हरमैन मसलन हज़रत अब्दुर्रहमान, शैख़ुल इस्लाम सैय्यद अहमद बिन ज़ैनी दहलान मक्की अलैहिमुर्रहमा वग़ैरह से तफ़्सीर, हदीस, फ़िक़्ह, उसूल ए हदीस व उसूल ए फ़िक़्ह की असनाद हासिल कीं। [2]

इसी सफर में आप ने हरमैन शरीफैन में बैठकर चन्द घण्टे में अपनी मशहूर व माअरूफ तसनीफ़ "अद्दौलतुल मक्किया बिल माददतिल गैबिया" लिखी जिसकी उल्मा ए हरमैन ने बहुत तारीफ की, और शैख़ सैय्यद अब्दुल हई बिन सैय्यद अब्दुल कबीर अलैहिर्रहमा ने आप से लिखित सनद ए हदीस हासिल की। [3]

सन 1323 हि०/सन 1324 हि० में जब मुहद्दिस ए बरेलवी दोबारा हज पर गये तो अपनी मशहूर ज़माना किताब "होसामुल हरमैन" को उल्मा ए हरमैन की खिदमत में पेश किया, जिस पर वहाँ के 35 जलीलुल क़द्र उल्मा ने ज़बरदस्त तकारीज़ लिखीं। [4]

---

1. मुजद्दिदीन ए इस्लाम नम्बर/ पे०: 311, 2. मुजद्दिदीन ए इस्लाम नम्बर / पे०: 385, 3. हयात ए आला हज़रत/ जिल्द:1/ पे०:372,373, 4. होसामुल हरमैन / पे०: 8

इस बार कसीर तादाद में उल्माए हरमैन ने आप से सनद ए इजाज़त ए हदीस हासिल कीं, जिनमें से चन्द के नाम यह हैं।

● शैख़ सैय्यद अब्दुल हई मक्की, ● शैख़ हुसैन जमाल बिन अब्दुर्रहीम, ● शैख़ सालेह कमाल मक्की, ● शैख़ सैय्यद ईस्माइल खलील मक्की, ● सैय्यद मुस्तफ़ा खलील मक्की, ● शैख़ अब्दुल कादिर कुर्दी, ● शैख़ फरीदम, ● सैय्यद मुहम्मद उमर, ● शैख़ उमर बिन हमदान, ● सैय्यद मामून बर्री, ● शैख़ुल दलाएल शैख़ मुहम्मद सईद (अलैहिमुर्रहमा)। [1]

बैअत व ख़िलाफ़त

● शैख़ सरहिन्दी ने सिलसिला ए चिश्तिया में अपने वालिद से ख़िलाफ़त पाई। सिलसिला ए कादरिया वग़ैरह की इजाज़त शैख़ सिकन्दर अलैहिर्रहमा से हासिल की। जब आप देहली तशरीफ़ ले गए तो वहाँ शैख़ बाकी बिल्लाह नक़्शबन्दी अलैहिर्रहमा से सिलसिला ए नक़्शबन्दिया में बैअत हो गए। शैख़ बाकी बिल्लाह ने अपने एक मुख्लिस से फ़रमाया कि "सरहिन्द के एक शख्स अहमद नामी ने जो कसीरुल इल्म और कविउल इल्म है फकीर के साथ कुछ दिनों नशिस्त व बर्ख़ास्त रखी। उसके हालात से ऐसा मालूम होता है कि वह एक ऐसा आफताब होगा कि उससे दुनिया रौशन हो जायेगी!" और उसी ज़माने में शैख़ सरहिन्दी की शोहरत अरब व अजम हर जगह फ़ैल गयी। [2] शैख़ सरहिन्दी को सलासिल ए अरबा (नक़्शबन्दी, क़ादरी, चिश्ती, सोहरवर्दी) के फैज़ान व कमालात हासिल थे,

---

1. पंज गंज ए विलायत / पे०: 71, 2. .तज़किरा उल्मा ए हिन्द / पे०: 104,

मग़र आप सिर्फ सिलसिला ए कादरिया नक़्शबन्दिया में मुरीद करते और दीगर सलासल का भी दर्स दिया करते थे। [1]

● 22 साल की उम्र में मुहद्दिस ए बरेलवी अपने वालिद और अल्लामा अब्दुल कादिर बदायुनी अलैहिर्रहमा के साथ खानकाह ए कादरिया बरकातिया मारहरा शरीफ तशरीफ़ ले गए। सैय्यद शाह आले रसूल मारहरवी अलैहिर्रहमा ने आप को देखा तो फ़रमाया: "आइये हम तो कई रोज़ से आपका इंतेज़ार कर रहे थे।" फिर हज़रत मारहरवी ने मुहद्दिस ए बरेलवी और मौलाना नक़ी अली खान को सिलसिला ए कादरिया बरकातिया में बैअत व ख़िलाफ़त से नवाज़ा। हज़रत मारहरवी फरमाते हैं: "मुझे बड़ी फ़िक्र थी कि बरोज़ ए हश्र अगर अहकमुल हाकमीन ने सवाल फ़रमाया, कि आले रसूल! तु मेरे लिए क्या लाया है? तो मैं क्या पेश करूँगा? मग़र खुदा का शुक्र है आज वह फ़िक्र दूर हो गई, उस वक़्त मैं **अहमद रज़ा** को पेश कर दूँगा।" [2] मुहद्दिस ए बरेलवी को भी सलासिल ए अरबा (नक़्शबन्दी, क़ादरी, चिश्ती, सोहरवर्दी) की इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल थी, लेकिन सिलसिला ए कादरिया से आप को खास लगाव था। [3]

असातज़ा

● शैख़ सरहिन्दी के असातज़ा की तादाद बहुत कम है, आपके असातज़ा के नाम यह हैं।

● शैख़ अब्दुल अहद सरहिन्दी, ● मौलाना कमालुद्दीन कश्मीरी, ● शैख़ याक़ूब

---

1. मुजद्दिद अल्फ़ सानी और आला हज़रत/ पे०: 23, 2. 2.पंज गंज ए विलायत / पे०: 95,96 , 3. मुजद्दिद अल्फ़ सानी और आला हज़रत/पे०: 23

मुहद्दिस कश्मीरी, ● क़ाज़ी बहलौल अलैहिमुर्रहमा (अलैहिमुर्रहमा)। [1]

● मुहद्दिस ए बरेलवी के असातज़ा (अध्यापकों) की तादाद भी शैख़ सरहिन्दी के असातज़ा की तरह बहुत कम है, आपके असातज़ा के नाम दर्ज ज़ेल हैं।

● मिर्ज़ा गुलाम क़ादिर बेग बरेलवी, ● मौलाना नक़ी अली खान बरेलवी,● मौलाना अब्दुल अली खान रामपूरी (अल्लामा फ़ज़ले हक़ खैराबादी के शागिर्द), ● शाह अबुल हुसैन नूरी मारहरवी, ● शाह आले रसूल मारहरवी (सिराजुल हिन्द अल्लामा शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस ए देहलवी के शागिर्द), ● ईमाम ए शाफ़ेइया शैख़ हुसैन सालेह मक्की, ● मुफ़्ती ए हनफिया शैख़ अब्दुर्रहमान सिराज मक्की, ● मुफ़्ती ए शाफेइया शैख़ अहमद बिन ज़ैनी दहलान मक्की क़ाज़ी उल कज़्ज़ात हरम शरीफ (अलैहिमुर्रहमा)। [2]

दर्स व तदरीस

● शैख़ सरहिन्दी फरागत के बाद अपने वालिद ए माजिद के पास ही दर्स व तदरीस में मशगूल हो गए। देश-विदेश से सैकड़ों तलबा जौक दर जौक आप के पास आना शुरू हो गए। रात दिन दर्स व तदरीस का मश्गला जारी रहता। आप क़ुतुब ए तफ़्सीर, हदीस व फ़िक़्ह ख़ुसूसन तफ़्सीर बेज़ावी, सहीह बुख़ारी, मिश्कातुल मसाबीह, शरह अल मवाफ़िक़, हाशिया अज़्दी, हिदाया, अवारिफुल मआरिफ़ और यज़्दवी वग़ैरह का दर्स देते थे। आप के साहबज़ादगान और बाअज़ खुल्फ़ा ने भी आप से दर्स हासिल किया। [3]

---

1. मुजद्दिदीन ए इस्लाम नम्बर / पे०: 311, 2. फतावा रज़विया / जिल्द: 1 / पे०: 12, 3. मुजद्दिद अल्फ़ सानी की दीनी व इल्मी ख़िदमात / पे०: 40

● फरागत के बाद मुहद्दिस ए बरेलवी पहले मसनद इफ्ता पर रौनक अफ़रोज़ हुए, इंफेरादी तौर पर कुछ तलबा को दर्स दे दिया करते थे। बाद में सन 1904 ई० में आप ने अल्लामा ज़फरुद्दीन मुहद्दिस बिहारी अलैहिर्रहमा के मशवरे पर "मदरसा मन्ज़र ए इस्लाम" के नाम से बरेली शरीफ मे एक मदरसा क़ायम किया। और इसी मदरसे में आप सहीह बुख़ारी, ओक़लीदस, तसरीह, तशरीहुल अफलाक, शरह चिगमिनी, अवारिफुल मआरिफ़ और रिसाला कोशैरिया वग़ैरह का दर्स देते थे। आप के साहबज़ादगान व खुल्फ़ा समेत बेशुमार तलबा ने आप से दर्स हासिल किया। [1]

खुल्फ़ा

● शैख़ सरहिन्दी के अक्सर खुल्फ़ा का तअल्लुक भारतीय उपमहाद्वीप, अरब, मध्य एशिया और अफ्रीका से था, शैख़ सरहिन्दी के खुल्फ़ा की तादाद हज़ारों में थी, जिन्होंने दुनिया भर में फ़ैलकर शैख़ सरहिन्दी के मिशन को आगे बढ़ाया, उनमें से चन्द खुल्फ़ा के नाम दर्ज ज़ेल हैं।

● ख़्वाजा मुहम्मद सादिक़, ● ख़्वाजा मुहम्मद सईद, ● ख़्वाजा मुहम्मद मासूम, ● मीर मुहम्मद नुमान बुरहानपुरी, ● शैख़ हमीद बंगाली, ● शैख़ मुहम्मद ताहिर लाहौरी, ● ख़्वाजा मुहम्मद सादिक़ काबुली, ● शैख़ करीमुद्दीन बाबा हसन अब्दाली, ● शैख़ युसूफ समरकंदी, ● मौलाना क़ासिम अली, ● मौलाना अब्दुल वाहिद लाहौरी, ● शैख़ मुहम्मद बिहारी, ● सैय्यद बाक़र सारँगपुरी, ● शैख़ अहमद इस्तन्बुल, ● मौलाना अब्दुल हक़ीम सियालकोटी, [2] ● सैय्यद अब्दुल अज़ीज़

---

1. मुहद्दिसीन ए अज़ाम की हयात व ख़िदमात / पे०: 673, 2. सीरत ए मुजद्दिद अल्फ़ सानी/पे०: 309-313

नह्वी मग़रिबी, ● शैख़ अली अल मुहक्किक़ मालिकी मदनी, ● शैख़ ईसा मग़रिबी (अलैहिमुर्रहमा)। [1]

● मुहद्दिस ए बरेलवी के खुल्फ़ा की तादाद भी अच्छी खासी थी, उन्हीं लोगों ने मुहद्दिस ए बरेलवी के मिशन को पूरी दुनिया में फैलाया, मुहद्दिस ए बरेलवी के बर्रे सग़ीर (भारतीय उपमाहाद्वीप) समेत अरब व अफ्रीका से तअल्लुक़ रखने वाले चन्द खुल्फ़ा (प्रतिनिधि) के नाम दर्ज ज़ेल हैं।

● हुज्जतुल इस्लाम मौलाना हामिद रज़ा खान, ● सदरुश्शरिया मुफ़्ती अमजद अली आज़मी, ● मुफ़्ती आज़म ए हिन्द अल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा खान, ● अल्लामा शाह अब्दुल अलीम सिद्दीक़ी मेरठी, ● मलिकुल उल्मा अल्लामा ज़फरुद्दीन मुहद्दिस बिहारी, ● मुहद्दिस ए आज़म हिन्द सैय्यद मुहम्मद किछौछवी, ● मौलाना अब्दुल अहद मुहद्दिस पिलीभीती, ● मुहद्दिस दीदार अली शाह अलवरी, ● सैय्यद सुलैमान अशरफ बिहारी (पूर्व प्रोफेसर दीनियात अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी), ● मौलाना अब्दुल बाकी बुरहानुल हक़ जबलपुरी, ● क़ुतुब ए मदीना अल्लामा ज़ियाउद्दीन मुहाजिर मदनी, ● सदरूल अफाज़िल अल्लामा सैय्यद नईमुद्दीन मुफस्सिर मुरादाबादी, ● फ़क़ीह ए आज़म मौलाना मुहम्मद शरीफ मुहद्दिस कोटलवी, ● सैय्यद ईस्माइल खलील मक्की, ● सैय्यद मुस्तफ़ा खलील मक्की आफन्दी, ● मुहम्मद सईद बिन मुहम्मद बिल सबील मुफ़्ती ए शाफेइया, ● शैख़ मुहम्मद सालेह कमाल मुफ़्ती ए हनफिया, ● अल्लामा सैय्यद

---

1. तारीख व तज़किरा खानकाह ए सरहिन्द शरीफ/पे०: 435-438

अब्दुल्लाह दहलान मक्की, ● शैख़ असअद बिन अहमद दहलान मक्की, ● हज़रत शैख़ मामून अल बर्री अल मदनी, ● मौलना सैय्यद मुहम्मद इब्राहीम मदनी, ● सैय्यद अबूबकर बिन सालिम अल बारिल अलवी, ● हज़रत शैख़ अब्दुल्लाह फरीद बिन अब्दुल कादिर कुर्दी (अलैहिमुर्रहमा)। [1]

इल्म ए क़ुरआन

● शैख़ सरहिन्दी को इल्म ए क़ुरआन में गहरी महारत हासिल थी, यहाँ तक की हुरूफ़ ए मोकत्तआत और मोतशाबेहात का भी इल्म हासिल था। अकबरी दौर के मशहूर दानिशवर मुल्ला फ़ैज़ी ने जब क़ुरआन पाक की तफ़्सीर "सवातेउल इल्हाम" लिखनी शुरू की तो बाअज़ मक़ामात पर शैख़ सरहिन्दी से मदद ली। एक दिन आप के साहबज़ादे शैख़ ख़्वाजा मुहम्मद मासूम अलैहिर्रहमा ने इसरार किया कि असरार ए मोकत्तआत से पर्दा हटा दीजिये। आप ने सिर्फ 'हे', 'फ़े' और 'क़ाफ़' से पर्दा हटाया तो होश उड़ गए_____इसके अलावा बाअज़ मक़ामात पर आप ने क़ुरआनी आयत से जो इस्तेदलाल फ़रमाया उसके नमूने मक्तूबात शरीफ में देखे जा सकते हैं। [2]

● मुहद्दिस ए बरेलवी के बारे में मुहद्दिस ए अज़ाम हिन्द अल्लामा सैय्यद मुहम्मद मुहद्दिस किछौछवी अलैहिर्रहमा फरमाते हैं: "इल्म ए क़ुरआन का अंदाज़ा सिर्फ आला हज़रत के उस उर्दू तर्जुमा (कंज़ुल ईमान) से कीजिये जो अक्सर घरों

---

1. तज़किरा खुल्फ़ा ए आला हज़रत / पे०: 15-17, 2. मुजद्दीद अल्फ़ सानी और आला हज़रत ईमाम अहमद रज़ा खान / पे०: 24

में मौजूद है, और जिसकी कोई मिसाल साबिक़ न अरबी ज़ुबान में है न फ़ारसी में और न उर्दू में, और जिसका एक एक लफ्ज़ अपने मक़ाम पर ऐसा है कि दोसरा लफ्ज़ उस जगह लाया नहीं जा सकता, जो बज़ाहिर महज़ तर्जुमा है मगर दर हक़ीक़त वह क़ुरआन की सहीह तफ़्सीर और उर्दू ज़ुबान में (रूह ए) क़ुरआन है।"[1]

मुहद्दिस ए बरेलवी हुरूफ़ ए मोक्तआत को जमाल ए मुस्तफाﷺ के मुख़्तलिफ़ पहलुओं की तस्वीर समझतें हैं। मुहद्दिस ए बरेलवी एक शे'र में हुरूफ़ ए मोक्तआत का खुलासा करते हुए यूँ फरमाते हैं:

क़ाफ़' गेसू हे' दहन ये' अबरू आँखें ऐन' स्वाद

क़ाफ़' हे' ये' ऐन' स्वाद' उनका है चेहरा नूर का!! [2]

इल्म ए हदीस

• इल्म ए हदीस पर शैख़ सरहिन्दी की गहरी नज़र थी, आप ने अक़ाइद ए अहले सुन्नत और अहवाल ए सूफ़िया ए मिल्लत को हदीस की रौशनी में साबित किया। मक्तूबात शरीफ में आपने तकरीबन 336 अहादीस नक़ल की हैं, उन तमाम अहादीस को जनाब अबुल कलीम मुहम्मद सिद्दीक़ फ़ानी साहब ने "तखरीज अहादीस ए मक्तूबात" में जमा किया है। [3] मतन ए हदीस में एक अरबैन यानी 40 मुन्तखब अहादीस का मजमुआ आपकी तालीफ़ है। मक्तूबात व दीगर रसाइल

1.फतावा रज़विया/जि०:1, पे०: 14 , 2. हदाइक ए बख्शिश / जि०: 2, पे०: 8, 3. तखरीज अहादीस ए मक्तूबात

में आप ने बाअज़ मक़ामात पर उसूल ए हदीस की फ़न्नी मुबाहिस जैसे सहीह, हसन, खबर वाहिद, खबर मुतवातिर और रावियों पर जरह वग़ैरह के हवाले से गुफ़्तगू की है। अस्र ए हाज़िर के नामवर मुहद्दिस शारेह बुखारी व मुस्लिम अल्लामा गुलाम रसूल सईदी अलैहिर्रहमा ने एक हदीस के मफ़हूम को इसलिये सहीह क़रार दिया कि मक्तूबात शरीफ में शैख़ सरहिन्दी ने उसे नक़ल किया है, अल्लामा सईदी लिखते हैं: "उनके (शैख़ सरहिन्दी) नज़दीक हदीस "لو لاك لما خلقت الافلاك" मानी ए सहीह व साबित है।" [1] [2]

● मुहद्दिस ए बरेलवी बुलंद पाया मुहद्दिस थे, अस्माउल रेजाल और जरह व ताअदील के आप ईमाम थे, शैख़ यासीन अहमद मदनी अलैहिर्रमा मुहद्दिस बरेलवी के बारे में फरमाते हैं: "وهو امام المحدثين" (वह मुहद्दिसीन के ईमाम थे)। [3] मुहद्दिस ए कबीर मौलाना अहमद अली मुहद्दिस सहरानपुरी अलैहिर्रहमा के शागिर्द ए खास शैख़ुल मुहद्दिसीन मौलना वसी अहमद क़ादरी मुहद्दिस सूरती अलैहिर्रहमा मुहद्दिस ए बरेलवी को "अमीरुल मोमेनीन फील हदीस" कहा करते थे।

मुहद्दिस ए बरेलवी ने हदीस की कोई ज़ख़ीम किताब तालीफ़ नहीं की लेकिन मसाइल के सबूत में बकसरत अहादीस रसूल ﷺ पेश करते हैं, और हदीस के अलफ़ाज़ व माना, उसकी सनद की तहक़ीक़, और रिजाल की जरह व ताअदील और उसूल ए हदीस के जो मबाहिस ज़िक्र करते हैं, वह सब आपकी मुहद्दिसाना बसीरत का वाज़ेह सोबूत है। इल्म ए हदीस पर आप ने 60 से ज़्यादा किताबें लिखीं हैं, क़ुतुब ए हदीस में हाशिया सहीह बुखारी, हाशिया सहीह मुस्लिम, हाशिया जामेअ तिर्मिज़ी, हाशिया सुनन नसई, हाशिया इब्ने माज्जा,

---

1.मकालात ए सईदी / पे०: 138 , 2.हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ सानी की इल्मी व दीनी ख़िदमात / पे०: 101,102 , 3. मुजद्दिद अल्फ़ सानी और आला हज़रत/पे०: 26

हाशिया मुस्नद ईमाम अहमद बिन हंबल और हाशिया मुस्नद ईमाम ए आज़म वग़ैरह आपकी लिखीं हुई शुरुहात हैं। [1]

मौलाना मुहम्मद हनीफ खाँ रज़वी बरेलवी हफ़िज़हुल्लाह ने मुहद्दिस ए बरेलवी की 350 तसानीफ से इंतेखाब करदः तकरीबन 4000 अहादीस "जामेउल अहादीस" में जमा की है। [2] इल्म ए हदीस में मुहद्दिस ए बरेलवी ने तखरीज के मौज़ुअ पर सबसे पहले "अल रौज़ुल बहीज फ़ी आदाबित्तखरीज" के नाम से एक किताब लिखी, इससे पहले इस मौज़ूअ पर कोई किताब नहीं थी, मुहद्दिस ए बरेलवी को इस तसनीफ़ का मूजिद कह सकते हैं। [3]

मक़ाम ए इज्तेहाद

● फ़िक़ह व कलाम में शैख़ सरहिन्दी को मुनफरिद मक़ाम हासिल था। इल्म ए कलाम में आप मुजतहिदाना मक़ाम पर फायेज़ थे। शैख़ सरहिन्दी अपने बारे में फरमाते हैं: "मुझे एक रात जनाब ए पैग़ंबर ए खुदा ﷺ ने फरमाया की तुम इल्म ए कलाम के एक मुजतहिद हो, उस वक़्त से लेकर मसाइल ए कलामिया में मेरी राय खास और मेरा इल्म मख़्सूस है।" अल्लामा इक़बाल आप के इल्म व फ़िक्र से अज़ हद मुतअस्सिर थे, अल्लामा ने अपने एक खुत्बा ए यूरोप में आपको "सुलूक व ईरफ़ान का मुजतहिद ए आज़म" करार दिया है। [4]

शैख़ सरहिन्दी ने अपने मक्तूबात में बाअज़ मक़ामात पर इल्म ए फ़िक़ह की अहमियत को उजागर किया है। आप शैख़ निज़ाम को लिखते हैं: "जिस तरह

---

1. मुहद्दिसीन ए अज़ाम की हयात व ख़िदमात /पे०: 675-679, 2. जामेउल अहादीस/ जि०: 1, पे०: 27, 3. तज़किरा उल्माय हिन्द / पे०: 113, 4. मुजद्दिद अल्फ़ सानी और आला हज़रत / पे०: 26,27

आपकी मजलिस शरीफ में क़ुतुब ए तसव्वुफ़ का ज़िक्र व मुताअला होता है। उसी तरह क़ुतुब ए फ़िक़्ह का भी ज़िक्र व मुताअला हो। फ़ारसी ज़ुबान में फ़िक़्ह की बे शुमार किताबें मौजूद हैं, जिसमें मजमुआ खानी, उमद्तुल इस्लाम और कन्ज़ ए फ़ारसी, अगर आपकी मजलिस शरीफ में क़ुतुब ए तसव्वुफ़ का ज़िक्र व मुताअला न हो तो कोई हर्ज नहीं। क्योंकि तसव्वुफ़ का अहवाल से तअल्लुक है वह क़ाल में नहीं आ सकता। लेकिन क़ुतुब ए फ़िक़्ह के ज़ेर ए मुताअला न होने से ज़रूर नुक़सान का एहतेमाल है। [1]

● मुहद्दिस ए बरेलवी मुरवज्जा उलूम ए दीनिया मसलन उलूम ए तफ़्सीर, हदीस, फ़िक़्ह, कलाम, तसव्वुफ़, तारिख, सीरत, मआनी, बयान, अरूज़, रेयाज़ी, मन्तिक, फ़लसफ़ा वग़ैरह के यक्ताये ज़माना फ़ाज़िल थे। एक फ़क़ीह के लिए जिन उलूम की ज़रूरत होती है मुहद्दिस ए बरेलवी को वह तमाम उलूम हासिल थे। [2]

शैख़ सैय्यद ईस्माइल अलैहिर्रहमा (मुहाफ़िज़ क़ुतुब खाना हरम शरीफ: मक्का मुअज़्ज़मा) मुहद्दिस ए बरेलवी की फिक़्ही तहक़ीक़ पर अपने तासुरात का इज़हार करते हुए फरमाते हैं: "मैं खुदा की क़सम खा कर कहता हूँ और बिल्कुल सच कहता हूँ कि इसे [ईमाम ए आज़म] अबू हनीफा नुमान बिन साबित [अलैहिर्रहमा] देखते तो बिला शुब्हा यह मस'अला उनकी आँखें ठंडी करता और यक़ीनन इसके मुवल्लिफ़ [मुहद्दिस ए बरेलवी] को अपने असहाब [ईमाम मुहम्मद,

---

1. मुजद्दिद अल्फ़ सानी की इल्मी व दीनी ख़िदमात / पे० :388, 2.फतावा रज़विया / जि०:1, पे०: 13

ईमाम अबू युसूफ, ईमाम ज़ोफर अलैहिमुर्रहमा] में शामिल फरमा लेते। [1]

अल्लामा इक़बाल मुहद्दिस ए बरेलवी के बारे में फरमाते हैं: "वह बेहद ज़हीन और बारीक बीन आलिम ए दीन थे, फिक़्ही बसीरत में उनका मक़ाम बहुत बुलंद था, उनके फतावा के मुताअला से अंदाज़ा होता है कि वह किस कद्र आला इज्तेहादी सलाहियतों से बहरह वर और हिन्दुस्तान के कैसे नाबेग़ ए रोज़गार फ़क़ीह थे, हिन्दुस्तान के उस दौर ए मोतअख्खेरीन में उन जैसा तब्बाअ और ज़हीन फ़क़ीह बमुश्किल मिलेगा। [2]

मुहद्दिस ए बरेलवी ने इल्म ए फ़िक़्ह पर तकरीबन 150 किताबें लिखीं हैं, [3] जिनमें से चन्द के नाम दर्ज ज़ेल हैं।

● फतावा रज़विया (12 जिल्दें), ● जद्दुल मुम्तार अला रद्दिल मोहतार (5 जिल्दें), ● शरह ए मोसल्लमुस्सुबूत, ● हाशिया फतावा आलमगीरी, ● हाशिया हिदाया, ● हाशिया फतह उल क़दीर, ● फतावा अफ्रीका, ● अहकाम ए शरीअत। [4]

तजदीदी कारनामे

● मुजद्दिद अल्फ़ सानी ने ऐसे ज़माने में इस्लाह ए उम्मत और दावत व तब्लीग़ के मिशन का आग़ाज़ किया जिस दौर में अकबर बादशाह ने दीन ए इलाही के

---

1. पंज गंज ए विलायत / पे०: 77 , 2.पंज गंज ए विलायत / पे०: 77, 3. गुलिस्तान ए मुहद्दिसीन / पे०: 167, 4. पंज गंज ए विलायत: 79

नाम से एक मुश्'रिकाना मज़हब ईजाद कर लिया था। अकबर के दौर में मुजद्दिद अल्फ़ सानी ने तब्लीगी व इस्लाही सरगर्मियाँ ख़ामोशी से जारी रखीं, लेकिन जब अकबर का विसाल हो गया और 21 अक्टूबर सन 1605 ई ० को नूरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर तख़्त नशीन हुआ तो शैख़ सरहिन्दी पूरी तैयारी के साथ मैदान में उतरे, जहाँगीर को राय देने की ताकत व हैसियत रखने वाले दरबारियों को आपने मक्तूबात लिखकर जहाँगीर की इस्लाह करवाई____और अकबरी फितने को जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया।

शैख़ सरहिन्दी जब जहाँगीर के दरबार में बिना सर झुकाये हाज़िर हुए तो वहाँ के दरबारी उल्मा ए सू ने जहाँगीर के सामने ताअज़ीमी सजदा न करने के ज़ुल्म में आपको जहाँगीर के ज़रिये जेल में डलवा दिया, शैख़ सरहिन्दी ने जेल में भी दावत व तब्लीग़ का फरीज़ा अंजाम दिया और सभी क़ैदियों को सच्चा-पक्का मुसलमान बनाकर बाहर आ गए। आप ने अहले तसव्वुफ़ की भी इस्लाह की। [1]

शैख़ सरहिन्दी के हम मकतब अल्लामा अब्दुल हक़ीम सियालकोटी अलैहिर्रहमा ने शैख़ सरहिन्दी के तजदिदी कारनामों को देखकर शैख़ सरहिन्दी को "मुजद्दिद अल्फ़ सानी" के गेराँ क़द्र ख़िताब से नवाज़ा। [2]

• मुहद्दिस ए बरेलवी के ज़माने में नित नए नए फ़ितने सर उभार रहे थे, जिनके ज़रिये मुसलमानों को मज़हबी, मुआशरती, सियासी और मआशी सतह पर कमज़ोर

---

1. मुजद्दिदीन ए इस्लाम नम्बर/ पे०: 312-316, 2. मलिकुल उल्मा अल्लामा अब्दुल हक़ीम सियालकोटी/ पे०:19

करने की नाक़ाम कोशिश की गई। मुहद्दिस ए बरेलवी ने इन नए फ़ित्नों की सरकोबी, अह्या ए दीन, रद्द ए बिदआत व मुनकरात की खातिर अपनी ज़ुबानी, क़ल्मी, और अमली तवानाईयाँ सर्फ कीं, जिसका न सिर्फ एअतेराफ किया गया बल्कि आपकी मुजद्दिदीयत का भी इक़रार किया गया।

जब आप हरमैन शरीफैन हाज़िर हुए तो शैख़ मूसा अली शामी अज़हरी मदनी अलैहिर्रहमा ने आपके बारे में फ़रमाया: "ख़ुदा की क़सम अग़र निगाहों पर बुग्ज़ व एनाद की तारीक़ पट्टी न बंधी हो तो आपके बेमिसाल कारहा ए नोमायां आपके मुजद्दिद ए बरहक़ होने पर हुज्जत ए कतई नज़र आते हैं। [1] सन 1318 हि०/सन 1900 ई० में पटना (बिहार) के तारीखी इज्लास में सैकड़ों उल्मा व मशाइख ए अहले सुन्नत की मौजूदगी में मुहद्दिस ए बरेलवी की मुजद्दिदीयत का ऐलान किया गया और आप "मुजद्दिद मेअते हाज़िरा" के गेराँ क़द्र ख़िताब से नवाज़े गये। [1]

तसानीफ़

● मुजद्दिद अल्फ़ सानी साहब ए तसनीफ़ बुज़ुर्ग थे, आपकी चन्द तसानीफ के नाम दर्ज ज़ेल हैं।

● मक्तूबात ईमाम ए रब्बानी , ● रेसाला तहलिलिया, ● रेसाला अस्बातुल नबुवा, ● रेसालतुल मब्दुल मआद, ● रेसाला मकाशफ़ातुल गैबिया, ● रेसाला आदाबुल मुरीदीन, ● रेसाला मुआरिफुल दीनिया, ● रेसाला रद्दुल शिया, ● तालीक़ातुल अवारिफ, ● रेसाला वहदतुल वुजूद, ● रेसाला मक़सूदुल सालेहीन। [2]

---

1. मुजद्दिदीन ए इस्लाम नम्बर/ पे०: 387, 2. हदाइक उल हनफिया/ पे०: 427

• मुहद्दिस ए बरेलवी भी साहब ए तसनीफ़ बुज़ुर्ग थे, आपके तसानीफ़ व तालीफ़ की तादाद सैकड़ों में है, जिनमें से चन्द के नाम दर्ज ज़ेल हैं।

• तम्हीदुल ईमान बेआयाते कुरआन, • मोबीनुल होदा फी नफिये इम्काने मिस्लिल मुस्तफा, • मोतबरुत्तालिब फी शोयूने अबी तालिब, • मकामेउलहदीद अला खद्दिल मन्तेकिल जदीद, • अल मक्सदुन्नाफे फी ओसूबतिन्नसबिर्राबे, • तय्येबुल इम्कान फी तअद्दोदिल जेहाते वल इम्कान, • कलामुल फहीम फी सलासिलिल जम्ए वत्तकसीम, • अस्सवाकेबुर्रज़्वीया अललकवाकेबिद्दुर्रिया, • हल्लुल मोआदेलात ले कविय्यिल मक्अबात। [1]

विसाल

• तिरसठ साल की उम्र में 28 सफ़र सन 1034 हि० में ईमाम ए रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़ सानी शैख़ अहमद फ़ारूक़ी सरहिन्दी नक़्शबन्दी अलैहिर्रहमा का विसाल हुआ, आपकी तदफीन सरहिन्द शरीफ (पंजाब, भारत) में हुई। [2]

• जुमे के दिन 25 सफ़र सन 1340 हि०/ 28 अक्टूबर सन 1921 ई० में दोपहर के वक़्त ईमाम ए अहले सुन्नत मुजद्दिद ए दीन व मिल्लत आला हज़रत ईमाम अहमद रज़ा खाँ क़ादरी मुहद्दिस ए बरेलवी अलैहिर्रहमा का विसाल हुआ, आपकी तदफीन बरेली शरीफ में हुई। [3]

:**मुहम्मद सलीम अंसारी अदरवी (9026058679)**

1.गुलिस्तान ए मुहद्दिसीन / पे०: 164-171, 2. मुजद्दिद अल्फ़ सानी और आला हज़रत / पे०: 22 , 3. पंज गंज ए विलायत / पे०: 128